जीवन की वास्तविकता

एकाग्रता पर आधारित जीवन की वास्तविकता

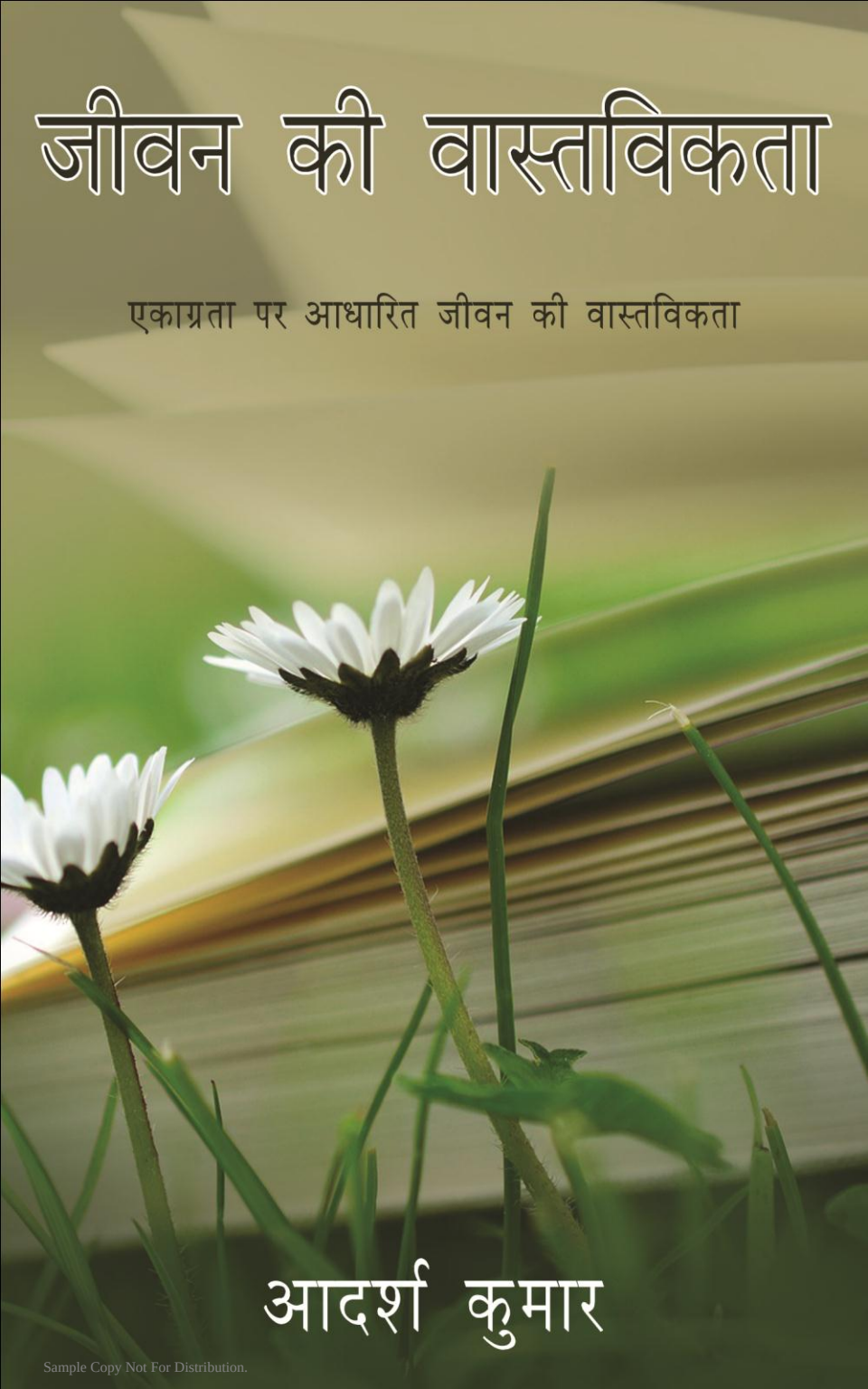

आदर्श कुमार

Sample Copy Not For Distribution.

जीवन की वास्तविकता

Sample Copy Not For Distribution.

Publishing-in-support-of,

EDUCREATION PUBLISHING

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.educreation.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-1-5457-0272-7

Price: ₹ 215.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Educreation.

Printed in India

Sample Copy Not For Distribution.

जीवन की वास्तविकता

एकाग्रता पर आधारित जीवन की वास्तविकता

आदर्श कुमार

EDUCREATION PUBLISHING
(Since 2011)
www.educreation.in

Sample Copy Not For Distribution.

Sample Copy Not For Distribution.

यदि आप संसार के बारे में या संसार आपके बारे में कुछ भी नकारात्मक सेन्स रखता है तब आपके जीवन की असफलता को बताता है ।

इस जीवन में सबसे महत्वपूर्ण कार्य अपने वर्तमान को पॉजिटिव और पवित्र बनाना होता है ।

Sample Copy Not For Distribution.

Sample Copy Not For Distribution.

वास्तविकता

सफलता वास्तविकता की ओर है और आप बिना वास्तविकता के सफलता को नहीं पा सकते वास्तविकता आपके स्वच्छ जीवन को बताती है जहां पर कम से कम तृष्णा और इच्छाए हो ताकि कम से कम अज्ञानता जीवन में पनप सके दरअसल वास्तविकता जीवन के उस रूप को कहते हैं जहां पर शून्य अज्ञानता के साथ एक भी दुख न पले वहाँ पर निश्वार्थ मन स्वच्छंद ज़िदगी के साथ उच्च पवित्रता पाई जाए अर्थात जीवन में शून्य तृष्णा पाई जाए वास्तविकता में उच्च जीवन क्षमता निम्न (न्यून) तनाव न्यून कम से कम बराबर जीरो copprom मानसिक गति उच्च स्वतंत्रता तथा उच्च जीवन पवित्रता जो लगातार समय परिवर्तन से आती है यही वास्तविकता को बताती है वास्तविकता जीवन के साथ समस्त मानव की सफलता के आधार का केंद्र बिन्दु है जीवन में अज्ञानता लड़ने की दास्तान जीवन की जरूरतों से शुरू होती है जहां से तृष्णा की भी उत्पत्ति होती है तृष्णा मानव जीवन में क्षमता को खोने की दर बढ़ाती है जिससे जीवन खुद ब खुद कमजोरी के साथ अज्ञानता को पाता जाता है दरअसल जीवन में

Sample Copy Not For Distribution.

क्षमता का खोना मतलब सब कुछ उचित खोना क्यूकी सांसारिक जीवन सिर्फ क्षमता पर ही आधारित है यदि क्षमता नहीं तो जीवन की कल्पना भी नहीं और लगातार क्षमता का विकास सिर्फ वास्तविकता पर ही रह कर पाया जा सकता है । वास्तविकता जीवन को सही तरीके के साथ सही पथ दिलाती है जहां पर जीवन भटकने की संभावनाएं क्षीण होती जाती है वास्तविकता सर्वोत्तम है और वास्तविकता के बल पर ही जीवन का अस्तित्व है दरअसल बिना जीवन के वास्तविकता का भी अस्तित्व नहीं अतः जीवन में खुदा का अस्तित्व सिर्फ जीवन होने तक ही सीमित है क्यूकी वास्तविकता मात्र जीवन का प्रत्यक्ष रूप है जो उच्च पवित्रता के साथ जीवन के अनुकूल पथों को दिलाती है उन पथों को जीवन खुद ही ग्रहण करता है अतः वास्तविकता का मतलब सिर्फ जीवन की जरूरतों को जीवन के अनुसार बताना मतलब प्रत्यक्ष जीवन को दिखाना न कि जीवन का परिवर्तन करना जीवन परिवर्तन तो खुद ब खुद ही आकर्षण के बल पर होता रहता है जीवन का अस्तित्व आकर्षण की क्रिया पर ही आधारित है जो मुख्यतः जीवन को परिवर्तनशील बनाने का कार्य करती है जीवन में परिवर्तन का अस्तित्व आकर्षण का क्रियारूप और वास्तविकता का अस्तित्व जीवन के उसी आकर्षण रूप को दिखाना । क्यूंकी जीवन क्षमता व्रद्धि और क्षमता क्षरण लगातार करता रहता है जिसकी वज़ह से

Sample Copy Not For Distribution.

वास्तविकता और अज्ञानता भी परिवर्तनशील हो जाती है वास्तविकता की व्रद्धि उच्च क्षमता की व्रद्धि और न्यून क्षमता क्षरण के बल पर ही होती है अतः जीवन में परिवर्तन दर का बहुत महत्व होता है मानसिक गति इच्छाए तृष्णा चाहते रिश्ते ठहरना अनुचित वातावरण में रहना ये सभी तत्व वास्तविकता को फीका करते है और जीवन में अज्ञानता को बढ़ाते है जबकि स्मूथ जीवन परिवर्तन उच्च स्वतत्रता न्यून जीवन विरोध कम से कम रिश्तों का दबाव व उच्च क्षमता विकास के लिए स्वच्छंद मंद के साथ सही समय पर सही जीवन की जरूरत पूर्ति करना जीवन की क्षमता को विकास करे यही सभी तत्व जीवन की वास्तविकता का विकाश करते है और मानव जीवन में खुदाई की पहचान दिलाते है ।

Sample Copy Not For Distribution.

अपवित्रता

वे प्रकृतियाँ (गुण, क्रियाएँ, आदतें, भावनाएं) जो मानव जाति की क्षमता को मजबूत नहीं करती और जो वास्तविक जीवन की जरूरत को नही बताती अर्थात वे बिना जरूरत और जरूरत से अधिक प्रकृतियों का प्रभाव ही अपवित्रता है यह जीवन के स्मूथ वेग और जीवन की पारदर्शिता को कम करके जीवन को अपवित्र और फीका बनाता है । अपवित्रता जीवन की स्पष्टता को कम करके जीवन को अज्ञानताशील बनाती है अर्थात वह बिना जरूरत वाला प्रभाव की मजबूती जो जीवन को वास्तविक दृष्टि से जितना अधिक प्रभावित करते हैं वही अज्ञानता है अपवित्रता की क्रियाशीलता जितनी प्रभावकरी होगी जीवन उतना ही प्रभावित होगा और विक्षोभ वाला बनेगा जीवन का प्रभावित होना उसमें पनपने वाली अपवित्रता और अज्ञानता पर ही निर्भर करता है इसे जीवन की आंतरिक या वास्तविक या मूल अपवित्रता कही जाती है इसका कार्य जीवन को प्रभावित करना होता है इसे जीवन की जरूरत वाले तथ्य से समझा जाता है अर्थात जो तत्व जीवन की वास्तविक जरूरत को नहीं बताते उन्हें भावनाओं के द्वारा जीवन मे ले जाने पर वे मात्र कूडे की तरह जीवन में संचित हो जाते हैं ।

Sample Copy Not For Distribution.

और ये तत्व जीवन के स्मूथ परिवर्तन को विक्षेपित करते है और जीवन की अज्ञानता को भी बढ़ाते है दरअसल जिससे इन अनुपयोगी तत्वों का प्रभाव जीवन में मजबूती को पकड़ता जाता है दरअसल ये तत्व जितना अधिक भावनाओं में (मस्तिष्क की सोचने की क्रिया में) लाये जाते हैं जीवन में उतनी ही अधिक मजबूती को पकड़ते जाते हैं यदि जीवन से इन अपवित्र तत्वों को अलग करना होता है तब हमें ज्यादा से ज्यादा बिना इनकी तरफ ख्याल किए सिर्फ उचित पवित्रता के साथ स्वच्छ परिवर्तन को ही चुनना होगा रिश्ते नाते जीवन में अज्ञानता को बढ़ाते हैं और जीवन को अपवित्रता से भरते है चूंकि जीवन में जितनी अधिक स्वच्छता , स्वतन्त्रता और जितना कम संबंधता विरोध (दबाव) पाया जाता है जीवन उतना ही पवित्र, सरल बनता जाता है । पवित्रता सांसारिक जीवन, भावनाओं का साथ लेकर खूबसूरती को उत्पन्न करती है, जो प्यार का रूप बनता है । प्यार का अपना कोई अस्तित्व तब तक नहीं होता, जब तक पवित्रता जीवन में कार्य नहीं करती । प्यार पवित्रता से पनपने वाली खूबसूरती है, जो लगातार जीवन को संयम (धैर्य) दिलाती है, जबकि खूबसूरती+जरूरत मिलकर साहस, आत्मविश्वास का रूप बनता है ।

जहांन पर साहस, क्षमता पर लेकिन आत्म विश्वास, खूबसूरती (धैर्य) पर आधारित है अतः जीवन में कुछ

Sample Copy Not For Distribution.

भी उपयोगी परिणाम बिना उपयोगी परिवर्तन के नहीं मिल सकता, जिनमे उचित जरूरत का समावेश पाया जाता है । अब सांसारिक अपवित्रता सिर्फ रिवाजों पर आधारित होने वाली एक क्रिया का परिणाम है, जो वास्तविक द्रष्टि से जीवन को प्रभावित करती है । यह जरूरी नहीं है कि जीवन सांसारिक अपवित्रता(बाहरी) से वास्तविक अपवित्रता(आंतरिक) को पाये अतः जीवन को सवारने के लिए सिर्फ जीवन की मूल जरूरतों की ओर लौटो और अपने वक्त के साथ क्षमता का उचित उपयोग करके जीवन की पवित्रता का विकास करो ।

Sample Copy Not For Distribution.

अनुचित क्या है?

सोचो मत जो अनुचित है उसे मस्तिस्क मे मजबूती मत दो क्योकि अनुचित के लिए उचित को खोना उचित नहीं और अनुचित का कोई मूल अस्तित्व नहीं, वह आपकी अज्ञानता की वजह से किसी भी रूप मे हो सकता है अर्थात उचित को पाने का गलत तरीका भी अनुचित है किसी उचित को पाने के लिए लालसा करना भी अनुचित है, किसी उचित के खो जाने पर उसको वर्तमान ज़िंदगी मे लाना, अफसोस करना अनुचित है, किसी बेहतर पल का ठहरकर इंतजार करना अनुचित है, उचित के लिए इच्छाएं करना भी अनुचित है और किसी उचित परिणाम पाकर ठहरकर खुशिया मनाना भी अनुचित है । अनुचित किसी भी रूप मे हो सकता है इसीलिए अज्ञानता का साथ बिल्कुल भी उचित नहीं है।

अनुचित उसे बताता है जिससे ज़िंदगी को हानि मिलती है । अनुचित का कोई मूल आस्तित्व नहीं होता यह आपके ज्ञान पर निर्भर करता है यह आपकी पवित्रता और वास्तविकता को स्पष्ट रूप से देख सकने की सामर्थ्य पर निर्भर करता है अनुचित आपके अधिक जीवन वेग से उत्पन्न हो सकता है, अनुचित उत्तेजित होने की स्थिति से उत्पन्न हो सकता है । अनुचित

Sample Copy Not For Distribution.

आवारगी से, अनुचित वातावरण से, रिश्तो से, मोह ममता से और आपकी कल्पनाओ से उत्पन्न हो सकता है अनुचित न सिर्फ आपके जीवन को प्रभावित करता है बल्कि यह आपकी ज़िंदगी का भी विरोध करता है । अनुचित जीवन मे अज्ञानता की बजह से आता है और अज्ञानता ठहरने की वजह से अर्थात जब-जब जीवन किसी प्रकार की मोह ममता के आकर्षण मे फँसता है तब-तब जीवन मे अज्ञानता बढ़ने की संभावनाएं बन जाती है । अज्ञानता को कम करने के कारक त्याग,पवित्रता,और उच्च एकाग्रता के साथ लगातार परिवर्तन करते रहना तथा त्राशना(लोभ,लालसा) और स्वार्थ से पूरी तरह से अलग रहना ही अज्ञानता को कम करता है । अज्ञानता अनुचित की जरूरत है और अनुचित जीवन मे होने वाले किसी भी प्रकार के गलत तरीके को बताता है।

अनुचित की उत्पत्ति जीवन की शुरुआत से ही हो जाती है अनुचित धैर्य की, आत्म नियंत्रण की और पवित्रता की कमी के कारण उत्पन्न होता है जब जीवन किसी परिवार के संपर्क मे आता है तब जीवन की पवित्रता और वास्तविकता उस परिवार पर निर्भर करती है, जीवन मे वास्तविकता स्पष्टता उस परिवार की पवित्रता पर ही निर्भर करती है चूंकि कोई भी सांसारिक जीवन जो रिश्तो से बंधा हुआ होता है वह मूल रूप से पूर्ण पवित्र नहीं हो सकता क्योकि जीवन मे अज्ञानता

Sample Copy Not For Distribution.

जीवन की परिवर्तन गति और क्षमता क्षरण पर निर्भर करती है चूंकि संसारिक जीवन मे क्षमता क्षरण होने की दर और जीवन की स्वतन्त्रता सदा घटती जाती है अतः जीवन मे अज्ञानता सदा ही बढ़ती जाती है चूंकि अज्ञानता अनुचित को संभावित करती है अतः जीवन मे अनुचित बिना जरूरत और जरूरत से अधिक वाले परिवर्तनों को बताता है जिनके प्रभाव को ज़िंदगी कभी अवशोषित नहीं करती और वे ही प्रभाव जीवन मे समस्त अनुचित परिणाम का कारण बनते है।

- आप जहान(ससार) की ओर नहीं बल्कि सबसे पहले खुद की ओर देखे और जीवन को पवित्रता से सींचे ।

Sample Copy Not For Distribution.

मानसिक गति

मानसिक गति सम्पूर्ण जीवन की तबाही का एक प्रमुख आधार बनती है मानसिक गति का प्रमुख कारण इच्छा करना है ख्वाव सजाना है चूंकि जब हम विपरीत (प्रतिकूल) अनुचित वातावरण पर रहते है और तब इच्छा करते है तब समझो अपनी बदहाली शुरू मानसिक गति को मौत का रास्ता भी कहा जाता है क्यूकी यदि एक बार आपके जीवन मे मानसिक गति की मजबूती हो जाए तब शायद वह क्रमानुसार सबकुछ तबाह कर देती है सशरी खुशी खूबसूरती पवित्रता उचित जिन्दगी सारी ख़्वाहिशे सफलता शायद सबकुछ मानसिक गति से तबाह हो जाता है चूंकि मानसिक गति ज्ञान व्रहिद की क्रिया पर ही आधारित है परंतु यह आवश्यकता से अधिक को बताती है जब जीवन मे मानसिक गति बढ़ती है तब क्षमता सहित सबकुछ खोने लगता है एक साधारण गति तक हमारी मानसिक गति हमे ज्ञान विकास का आधार बनती है परन्तु जैसे -2 यह मजबूत होती जाती है वैसे -2 हमारा जीवन कमजोर और असहाय तथ बदनसीब बनने लगता है मानसिक गति एक साधारण गति तक जीवन गति को बताती है परन्तु जैसे-जैसे यह बदतर वातावरण के बीच रहकर बढ़ती है जीवन ठहरने की ओर बढ़ता जाता है फिर उचित ज्ञान होने के बावजूद भी हम सवरने (संभलने) पर नाकाम होते है मानसिक गति बढ़ाने के

Sample Copy Not For Distribution.

Get Complete Book
At Educreation Store
www.educreation.in

Sample Copy Not For Distribution.

जीवन की वास्तविकता

Life is unique and base on concentrations and purity this explains that book.

You may reach author at:
✉ adarsh1kumar1999@gmail.com

EDUCREATION
PUBLISHING (Delhi)
www.educreation.in

Also available as an eBook

NON-FICTION

ISBN 978-1-5457-0272-7

Sample Copy Not For Distribution.